RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 16 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 23 सितम्बर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

हिमालयी भू-भाग/उत्तराखण्ड में क्या हो रहा है?

यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा कि जाने बगैर परियोजनाएं लागू हों

त्रिभुवन सिंह पांगती
अपर महानिदेशक
(सेवानिवृत)
खानमंत्रलय,
भारत सरकार
(भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण)
देहरादून।

भूगर्भीयता के अत्यधिक विवर्तनिक क्षेत्र (highly tectonic region of himalaya) में किसी भी सतत विकास में भूविज्ञान एक प्रमुख और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिमालयी भू-भाग में किसी भी परियोजना के शुरू होने से पहले हिमालय में लगातार भूस्खलन और विस्तृत भू-भाग की संरचना की जानकारी तथा इनसे होने वाली समस्यों को गम्भीरता से देखा जाना चाहिए।

मेरी अपनी 37 वर्षों की सेवा के दौरान व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है, जो कि हिमालयी इलाकों में इंजीनियरिंग भूविज्ञानी के रूप में उत्तराखण्ड, हिमाचल, नार्थ ईस्ट एवं जेएडंके राज्यों में करने से प्राप्त किया है। यह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है कि निजी कम्पनियां कई अन्य क्षेत्रें में सूक्ष्म बिजली परियोजनाओं और संचार एवं अन्य इंफरास्ट्रचरल परियोजनाओं के निर्माण में शामिल हो रही हैं जिन्हें भूवैज्ञानिक और इलाके की भू-भाग की स्थिति से सम्बन्धित जानकारी के अभाव में इस तरह के इलाके में वे सभी परियोजनाएं पूरी तरह से उत्तराखण्ड राज्य में विफल हो रही हैं जा`कि प्रत्यक्ष रूप में कई परियोजनाओं में देखा जा चुका हैं।

हिमालयी भू-भाग में यातायात सुरंगों का प्रावधान सबसे अच्छा विकल्प है। भूगर्भीय जियोहैजड एवं भू-गर्भीय संरचना का विस्तृत अध्ययन, इस प्रकार के भूगर्भीय अतिसम्वेदनशिल क्षेत्रों में किया जाना अति आवश्यक हैं। यह अध्ययन किसी भी तकनीकी विशेषज्ञता रखने वाली सरकारी डिपार्टमेंट या अन्य तकनीकी एजेंसियों जिन्हें हिमालयन क्षेत्रों में कार्य करने का विशेषज्ञता प्राप्त हो, कराया जाना अतिआवश्यक है जिसको किसी भी कीमत पर नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

उत्तराखण्ड राज्य में सभी राष्ट्रीय राजमार्गों की स्थिति, जो निर्माणाधीन और पूर्ण होने के चरण में हैं, सभी मौसमों में लगातार गम्भीर भूस्खलन की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जो मेरे सभी क्षेत्रों में भ्रमण के दौरान अनुभव किया है।

1. कटी हुई ढलानों को स्थल की भूगर्भीय परिस्थितियों के अनुसार संरक्षित नहीं किया जा रहा है और उचित निवारक उपायों का पालन नहीं किया जा रहा है। यहाँ तक कि कई पुलों को भी जमीनी भूगर्भीय स्थितियों के बारे में कम जानकारी के कारण ध्वस्त हो रहे हैं।
2. भारी एवं अनियंत्रित ब्लास्टिंग/विस्फोट।
3. व्यस्थित ड्रेनेज सिस्टम का पूर्ण अभाव।
4. अवैज्ञानिक तरीके से सुरक्षा दिवारों जैसे रिटर्निंग इत्यादी को जमीनी भूगर्भीय स्थितियों को ध्यान रखते हुए नहीं बनाए जाना।

उत्तराखंड राज्य में चल रही प्रमुख परियोजनाओं मै भी जैसे सड़क और पुलों, रेलवे एवं अन्य इफंरास्ट्रचरल परियोजनाएं के निर्माण के दौरान कई गाँवों में गम्भीर खतरों/भूस्खलन की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि विशेष रूप से इस प्रकार के टेक्टोनिक इलाके में विशेषज्ञता की कमी है। इसके अलावा किसी विशेषज्ञ (भूवैज्ञानिक) की सलाह नहीं ली जा रही है और प्रसिद्ध सरकारी विभाग द्वारा एक उचित तकनीकी निगरानी/समीक्षा, तकनीकी विशेषज्ञता (भूविज्ञान) रखने वाले ऐसे हिमालयी इलाके में काम करने से सभी चिन्ताओं के लिए ज्ञात कारणों के रूप में पूरी तरह से टाला या अनदेखा किया जा रहा है।

ऐसे भूभाग की समस्याओं को इसकी बेहतर सम्भावनाओं में गम्भीरता से देखा जाना चाहिए। सभी बुनियादी ढांचे और संचार परियोजनाओं के लिए सभी तकनीकी समीक्षा और सलाह प्रदान करने के लिए प्रख्यात विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय समिति भी तुरन्त स्थापित करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में सतत विकास के लिए।

वर्ष 2013 में उत्तराखण्ड में तबाही के लिए मैंने 2014-15 में केदारनाथ टाउनशिप क्षेत्र के पुनर्निर्माण हेतु एक व्यापक उपचार योजना की सिफारिश की थी। जिसे उस समय की सरकार द्वारा विधिवत स्वीकार करते हुए अनुमोदन किया गया था तथा तत्कालीन सरकार द्वारा लागू किया जा रहा था लेकिन सुझाए गए कुछ सबसे प्रासंगिक उपायों को वर्तमान में निष्पादित नहीं किया जा रहा है जो भारी बारिश के दौरान कभी भी गम्भीर खतरे की समस्या पैदा कर सकती है।

वरूनावत जैसी समस्या केदारनाथ में भी उत्पन्न होने की काफी सम्भावना है।

जोशीमठ, नैनीताल, कर्णप्रयाग, एवं अन्य स्थलों में उचित ट्रीटमेंट/ पुनर्निर्माण कार्य अभी तक लम्बित हैं जिसमें तुरन्त प्रभाव से कार्यवाई सुनिश्चित किया जाना अतिआवश्यक हें। इन भूस्खलन क्षेत्रों का ट्रीटमेंट इत्यादि किसी तकनीकी विशेषज्ञ भूवैज्ञानिकों (प्रसिद्ध सरकारी विभाग) सलाह पर जिन्हें हिमालयन क्षेत्र में काम करने का अनुभव प्राप्त हो कराया जाना चाहिए जिससे उत्तराखण्ड राज्य का सतत विकास सम्भव हो सके।

मेले-त्यौहार हमारी सांस्कृतिक विरासत

रतन सिंह किरमोलिया

उत्सव, मेले, त्यौहार या देव गाथाएं जहाँ हमारे राष्ट्र जीवन की आशा, आकांक्षा, उत्साह और उमंगों के प्रतीक होते हे।, वहीं ये हमारी राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता के दिग्दर्शन भी कराते हैं। इनका बार-बार मनाए जाने का मतलब है आशामय जीवन में आस्था, विश्वास और संकल्प को मजबूती देना। यही कारण है कि ये सार्वजनिक उत्सव, मेले, कौतिक, त्यौहार आदि हमारी संस्कृति और सम्यता के परिचायक भी हैं। इसीलिए ये हमारी सांस्कृतिक विरासत भी हैं। इनका समय-समय पर उत्साहपूर्वक मनाया जाना जरूरी है।

अंग्रेजों के आने से पूर्व हमारी भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक विरासत अक्षुण्ण थी। हमारे लोग अपनी संस्कृति, भाषा एवं सभ्यता के लिये पूर्ण समर्पित थे। उनके अन्दर भारतीय जीवन मूल्य कूट-कूट कर भरे हुए थे। यही कारण रहा कि अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाने से पहले हमारी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत, भाषा आदि को छिन्न-भिन्न करने की नीति अपनाई। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के साथ अंग्रेजियत और विदेशी साजोसामान को महत्व दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने हमारे राजा महाराजाओं को लड़ाया। कुछ लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया, उन्हें प्रलोभन दिया। थोकदार पधान आदि पदों पर नियुक्त कर उन्हें बड़ी-बड़ी रियायतें जागीरें प्रदान कर प्रलोभन देकर अपने चंगुल में ले लिया।

इस तरह अंग्रेजों ने सबसे पहले हमारी सांस्कृतिक विरासत और भाषा को खत्म किया, फिर धीरे-धीरे लोग अंग्रेजी और अंग्रजियत में आनन्द लेने लगे। सामान्य जनता से कुली बेगार यानी बोझ ढोने का काम लिया जाने लगा। इससे निजात पाने में एक सदी लगी। उसी का गहरा असर है हमारे लोग अपनी भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाजों से दूर पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता को अपनाने को मजबूर हैं। अंग्रेजी भाषा का मोह तो छोड़ ही नहीं पा रहे हैं।

हमें अपनी भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं, त्यौहार, मेले, उत्सव, रीति-रिवाजों को बचाने के लिए अपनी इन परम्पराओं को मनाना, अपनाना बहुत जरूरी है। हमारा रहन-सहन, खान-पान, भाषा-बोली, तीज-त्यौहार, मेले-उत्सव इन सबका स्वरूप बनाए रखना भी जरूरी है। हमारे गाँव-घर, आम आदमी आज भी अपनी बोली-भाषा और इन संस्कृति का वाहक होते हैं। संस्कृति मनुष्यों में संस्कार पैदा करती है और उन्हें पुष्ठ भी करती है। ये संस्कार ही मनुष्य को मनुष्यता में बनाए रखते हैं। संस्कार ही मानव में जीवन मूल्यों की संस्थापना करते हैं और इन जीवनमूल्यों को परिपुष्ट करते हैं।

हमारी सभ्यता, भाषा, संस्कृति एक-दूसरे की पोषक भी होती हैं और एक-दूसरे के पूरक भी। ये एक-दूसरे को प्रभावित भी करती हैं। ये हमारी संस्कृति का ही प्रभाव है जो नर को नारायण बनाने को प्रेरित करती हैं और नर को नारायण बनाने की शक्ति रखती है। नारायण का आशय हमारे ऋषि, मुनि, तपस्वी, सन्त, महात्मा जो ईश्वरीय परमपद प्राप्त कर लेते हैं और त्रिकालदर्शी बन जाते हैं। प्रकृति और मानव का अन्तरतम सम्बन्ध सदियों से रहा है और रहेगा। धीरे-धीरे मानव सभ्यता का विकास हुआ। समय के परिवर्तन के के साथ न जाने यहाँ कितनी जातियां पनपी और नष्ट होते रहीं लेकिन सभ्यता के चरण बढ़ते रहे। समय के

शेष पृष्ठ 2 पर

सुप्रीम सुनवाई : पुनर्वास प्रस्ताव के लिये सरकार को दो महीने का समय दिया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तराखण्ड सरकार को हल्द्वानी अतिक्रमण मामले में रेलवे ऑथोरिटी की ओर से बेदखल किये गये व्यक्तियों के लिये पुनर्वास योजना का प्रस्ताव लाने के लिए दो महीने का समय दिया है। जस्टिस सूर्यकान्त, जस्टिस दीपांकर दत्त और जस्टिस उज्जवल भुइयां की पीठ रेलवे के आवेदन पर सुनवाई कर रही थी। जिसमें लगभग 50 हजार लोगों की बेदखली पर रोक के आदेश में संशोधन की मांग की गई थी। इन लोगों ने हल्द्वद्यानी में रेलवे की सम्पत्तियों पर अतिक्रमण किया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि अतिक्रमणकारी भी इन्सान हैं और रेलवे व लोगों की जरूरतों के बीच सन्तुलन बनाने की जरूरत है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

देवी पूजा का लाभ समाज को हो

ग्राम, जिला, प्रदेश, देश में जिस प्रकार से देवी पूजा की मान्यता है इसका लाभ समाज को होना चाहिये। देवभूमि उत्तराखण्ड में तो नन्दा-सुनन्दा, भगवती, महाकाली सहित कई प्रकार से देवियों का आह्वान किया जाता है और स्थानीय देवी-देवताओं की बेसुमार पूजा होती है। इन सबके बाद भी जिस प्रकार से बालिका असुरक्षा के मामले प्रतिदिन दिखाई दे रहे हैं वह हमारी पूजा और उत्सवों पर सवाल होंगे।

इन दिनों लगातार छोटे बच्चों से लेकर युवतियों के साथ दुष्कर्म, अपहरण, उत्पीड़न, सामुहिक कुकर्म की घटनाएं सुनने को मिल रही हैं। 'बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ' के नारे लगाये जा रहे हैं, संगोष्ठी हो रही है, जुलूस निकाले जा रहे हैं लेकिन स्कूलों में भी भय का वातावरण दिखाई दे रहा है। किसी बालिका के घर से बाहर पैर रखते ही उसके सुरक्षित वापस आने तक माता-पिता-परिजन मन में विचार करने लगे हैं। आँखिर यह सब क्या होता जा रहा है? जिस देश-प्रदेश में में देवी पूजा का सर्वाधिक महत्व है और कथा भण्डारों की भरमार होती हो, वहां बालिकाएं असुरक्षित हों यह समाज का सबसे खोखलापन कहा जायेगा।

देवभूमि में परम्परागत उत्सवों की जगह महोत्सव लेते जा रहे हैं। जिन स्थानों कुछ नहीं होता हो वहाँ भी किसी न किसी नाम से महोत्सव होने लगे हैं। सोशल मीडिया के रूप में हर हाथ में मोबाइल और इसका नशा बढ़ता जा रहा है। शिक्षाप्रद बातों से ज्यादा घटिया बातों का प्रचलन फैल रहा है। परम्परागत उत्सवों में पूजा-अर्चना और रिश्तेदार-नातेदारों की भेंट होती थी, बाजार में दैनिक उपयोग की खरीददारी होती थी और लोक के असल कलाकार भी अपनी कसर पूरी करते थे लेकिन आजकल महोत्सवों के नाम पर उछालमार नाच वालों को ढूंढकर आमंत्रित किया जा रहा है और युवाओं के सामने जो परोसा जा रहा है वह ऐसा ग्लैमर है जिससे न लोक सुधरने वाला है और न भाग्योदय ही होगा। कई बार तो नशे में तरबतर युवा भटक जाते हैं। यह सारे लक्षण देवी पूजा के नहीं हो सकते। तो इसका समाज को लाभ भी नहीं मिलेगा। ऐसे में जरूरी है कि कड़े और बड़े अनुशासन लागू करने के लिये समाज आगे आए। कौतिक के उस स्वरूप को बनाए रखें जो हमारे सयाने तय कर गये थे। इसमें बड़े-बूढ़ों से लेकर सबका सम्मान हो। जब समाज में सुरक्षा बनी रहेगी, बालिकाओं को सम्मान मिलेगा उस दिन देवी हमारी देवी पूजा भी सफल होगी।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

अडाणी समूह से समझौता और केन्या में प्रदर्शन

नैरोबी। केन्या सरकार और भारतीय उद्योगपति गौतम अडाणी के नेतृत्व वाले अडाणी समूह के बीच हुए एक समझौते के विरोध में देश के मुख्य हवाई अड्डे पर सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। समझौते के तहत समूह 30 वर्षों तक हवाई अड्डे का संचालन करेगा ऐसे में केन्या एयरपोर्ट वर्कर्स यूनियन नाराज है।

भारतीय मूल की लेखिका को साहित्य पुरस्कार

सिंगापुर। सिंगापुर की नान्यांग टैक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी में भारतीय मूल की व्याख्याता प्रशान्ति राम ने अंग्रेजी भाषा में लिखी अपनी लघुकथा 'नाइन यार्ड साडीज'के लिये सिंगापुर साहित्य पुरस्कार जीता है। इनकी पहली रचना है। कहानी का ताना बाना सिंगापुर, न्यूयॉर्क और कनेक्टिकट में फैले तमिल ब्राह्मण परिवार की पीढ़ियों के इर्द गिर्द बुना गया है।

भारतीय मूल के पूर्व मंत्री प्रवीण का निधन

जोहनिसबर्ग। भारतीय मूल के दक्षिण अफ्रीकी नेता और रंगभेद विरोधी कार्यकर्ता प्रवीण गोरधन का विगत दिवस एक अस्पताल में निधन हो गया। 75 वर्षीय प्रवीण कैंसर से पीड़ित थे। दक्षिणी अफ्रीका 1994 में जब लोकतंत्र की ओर अग्रसर था, गोरधन तब से राजनीति में थे।

पूर्वी लद्दाख के चार बिन्दुओं से पीछे हटे चीनी

बीजिंग। चीन के विदेश मंत्रालय ने पूर्वी लद्दाख में गलवान समेत चार बिन्दुओं से सैनिकों के पीछे हटने का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत और चीन ने रूस में अपनी बैठक के दौरान द्वीपक्षीय सम्बन्धों में सुधार के वास्ते माहौल बनाने के लिये मिलकर काम करने पर सहमति व्यक्त की है। चीनी प्रवक्ता ने कहा कि हाल के वर्षों में दोनों देशों की अग्रिम मोर्चे पर तैनात सैनाओं ने चीन-भारत सीमा के पश्चिमी क्षेत्र में चार बिन्दुओं से पीछे हटने का काम पूरा कर लिया।

आगरा को विरासत शहर की याचिका खारिज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आगरा को विरासत शहर घोषित करने का अनुरोध करने वाली याचिका को खारिज कर दिया और कहा कि याचिका में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि इस तरह की घोषणा से शहर को कोई विशेष लाभ मिल मिलेगा।

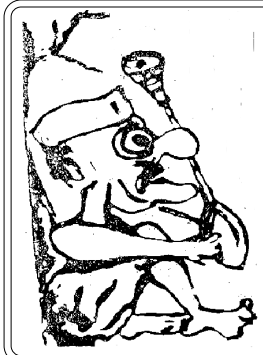

फसक

दाज्यू, कलजुग में और ही और हो रही ठैरी

छलर-बलर करके रिझाने वाले बमक रहे हैं बल

दाज्यू, घोर कलजुग दिखाई दे रहा है। रिश्वतखोरी तो आम हो गई है, जो पकड़ा गया वही दिखाई दे रहा है। दून में एलआईसी के दो जूनियर इंजीनियर भी इसकी नपाई में आ गए बल। पिथौरागढ़ के ऐंचोली निवासी भैरवनाथ ठगी का शिकार हो चुके हैं। इंडिगो एयरलाइन्स पन्तनगर में नौकरी दिलाने के नाम पर उनसे ढाई लाख सीधे कर लिये बल। हल्द्वानी शहर में तो कलजुग का प्रकोप सबसे ज्यादा हो चुका है। स्कूल में बच्ची का यौन उत्पीड़न की घटना से अभिभावक डरे हुए हैं। देहरादून के एक प्रतिष्ठित स्कूल में कक्षा दस की छात्रा के साथ्थ दुष्कर्म का मामला चर्चा में है। 12वीं के छात्र को इस छात्रा के साथ पकड़ा गया। इससे पहले दून के ही एक बोर्डिंग स्कूल में आठवीं के छात्र के यौन उत्पीड़न का विवाद अभी तक शान्त नहीं हुआ है। दाज्यू, हल्द्वानी के बनभूलपुरा में पति को दुष्कर्म में फंसाने का प्रयास हुआ। कलजुग में और ही और हो रही ठैरी। गरमपानी में युवक संग पत्नी का फोटो फेसबुक में देख पति का माथा ठनक गया। उधर पहचान छिपाकर रेप करने वाला जेल भेज दिया गया है। लोहाघाट से स्कूटी चोरी और लापता युवती की सुराग लगा रही पुलिस ने बताया कि दिल्ली निवासी आसिफ अपना नाम नितिन बताकर लोहाघाट की युवती को वृन्दावन ले गया।

दाज्यू, खुल्लम-खुल्ला हो रही दुनिया में छलर-बलर करके रिझाने वाले बमक रहे हैं बल। शरीर और दीमाग की कमजोरी का पता ऐसे समय में लगने वाला ठैरा जब अनुड्वांड भी भौंभाट करते हुए लपलपाते हैं। बाजपुर में रात्रि पुलिस गश्त के दौरान घूमती हुई युवती को उसके परिजनों को सौंपा गया। रुद्रपुर के ट्रांजिट कैम्प इलाके में एक युवती ने युवक पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। दाज्यू, कलजुग की कथा कम होने वाली नहीं है। हल्द्वानी के प्रतिष्ठित ज्वैलरी शेरूम में काम करने वाली महिला ने अपने ससुर पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। दाज्यू, पुलिस वाले भी सोचते होंगे कि कब आराम मिलेगा, एक मामला निपटाया नहीं दूसरा आ जाता है। दून के एक निजी शैक्षिक संस्थान की महिला अधिकारी की अश्लील मार्फ वीडियो बनाकर वायरल करने का आरोपी पुलिक के हाथ है बल। जिस संस्थान में महिला की मार्क वीडियो बनाई गई, आरोपी वहाँ पढ़ाई कर चुका है। वह हरिद्वार सिडकुल की एक कम्पनी में नौकरी कर रहा था।

हर आम और खास कलजुग में फंसा है। मंत्री रेखा आर्य ने एक युवती के खिलाफ रिपोर्ट करवा दी है बल। अपनी महिला एवं बाल कल्याण विभाग की मंत्री रेखा ने पति गिरधारी पप्पू की करीब 30 वर्षीय महिला मैनेजर और उसके मौसा के खिलाफ थाना बारादरी बरेली में रिपोर्ट करवाई। आरोप है कि आधार और पासपोर्ट में गिरधारी पप्पू को पति लिखवाया है। दाज्यू, बड़े लोगों का बड़ा मामला ठैरा। गिरधारी पप्पू के मामले पहले भी चर्चित रहे हैं। अब रेखा आर्य मंत्री ठैरी तो कागज-पत्तर का खेल भी चलने ही वाला हुआ। पुलिस के मुताबिक कल्पना मिश्रा नाम की युवती मूल रूप से आगरा की रहने वाली है। गिरधारी ने उसे अपने वहाँ मैनेजर नियुक्त किया और वह उन्हीं के वहाँ रह रही थी।

दाज्यू, दुष्कर्म के मामले में आरोपित नेपाल निवासी लोहाघाट बन्दीगृह से भाग गया। कंचनपुर जिले के ग्राम धर्मपुर निवासी शंकरलाल ने घास काटने गई महिला के साथ दुष्कर्म किया था। बन्दीगृह में भोजन के समय गिनती में जब एक कैदी कम मिला तब हड़कम्प मचा। पुलिस ने ढूंढखोज कर उसे रीठासाहिब के जंगल से पकड़ा।

कर्म-कुकर्म सब देखने को मिल रहे हैं। गोलू और सब्बू बहुत परेशान हैं। कह रहे थे- 'जब से लबली मैडम ने चूरन खिलाया है तब से कहीं मन नहीं लगता।' दाज्यू, चूरन खिलाने की कला भी हर किसी को नहीं आने वाली ठैरी। बालमुकुन्द भालू की तरह उछलता हुआ शिकार की तलाश में रहा है और बलात्कारी रामू मौके की तलाश में पूरी तरह नंग्योली में उतर आया है। कलजुग का भगवान भले लोगों की लाज बचाए रखे, यही कामना है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

मेले त्यौहार हमारी.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रभाव और प्रवाह में सब कुछ बनते भी रहा और नष्ट होते रहा। पुराना बदलता रहा, नया बनते गया। आगे भी यह क्रम युगों तब जारी रहेगा परन्तु एक बात जो आज तक जीवित है वह है विभिन्न जातियों और समुदायों के रीति-रिवाज और तीज-त्यौहार। इन्हें जीवित रखा हमारे इन्हीं मेलों, त्यौहारों, उत्सवों ने। यही हमारी पहचान है। यही हमारी सभ्यता और संस्कृति भी है। यही है हमारे राष्ट्र की अनेकता में एकता।

हमारी भारतीय संस्कृति इस देश के कौने-कौने से उद्भूत विभिन्न संस्कृतियों का गंगा-जमुनी संगम है। इसलिये आज जरूरत है हम अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से जुड़े रहें। उन्हें अपने दैनिक व्यवहार में लाते हुए इसे अक्षुण्ण रखने का भागीरथ प्रयास करें। जब हमारा अपने लोक से जुड़ा रहेगा तभी हमारी ये लोक परम्पराएं जीवित रह पाएंगी।

(ग्राम पो. अणां, वाया गरुड़ बैजनाथ जनपद बागेश्वर)

अंडरवर्ल्ड पी.पी. कथा

जूना अखाड़े की ओर से जाँच के बाद थानापति राजेन्द्र गिरि पद से निलम्बित

अल्मोड़ा/हरिद्वार। जेल में आजीवन सजा काट रहे अण्डरवर्ल्ड माफिया प्रकाश पाण्डेय उर्फ पी.पी. की कथा लम्बी होती जा रही है। विगत दिनों जेल से निकलने के लिये रचे गये इनके अभियान के बाद हलचल बनी हुई है। मामले में जूना अखाड़े की ओर से जाँच के बाद अखाड़े के थानापति राजेन्द्र गिरि को पद से निलम्बित किया गया। कहा गया था कि पी.पी. अब अपने बचे हुए जीवन को सन्यासी के रूप में बिताना चाहता है और इसके लिये जूना अखाड़े के थानापति राजेन्द्र गिरि ने प्रेस को बताया कि जेल में जाकर उन्होंने पीपी को दीक्षा दी।

पी.पी. को जेल में दीक्षा दिये जाने के समाचार के बाद अखाड़ा के अन्तर्राष्ट्रीय संरक्षक श्रीमहन्त हरिगिरि ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि थानापति राजेन्द्र गिरि ने न तो जूना अखाड़ा प्रबन्धन और न अपने वरिष्ठों से इसकी पूर्व अनुमति ली। इसलिये उन्हें अखाड़े की जाँच पूरी होने तक तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया गया है। आरोपों की पुष्टि होने पर उन्हें जीवनपर्यन्त के लिये अखाड़े से बाहर कर दिया जायेगा।

आरोप है कि पी.पी. ने साधु बनकर प्रयागराज कुम्भ के बहाने जेल से बाहर आने की योजना के तहत अल्मोड़ा जेल में दीक्षा ली। इसमें उसका सहयोग जूना अखाड़ा के थानापति राजेन्द्र गिरि और उनके 11 साथियों ने किया था। इन्हीं 11 में से 3 ने जेल के भीतर जाकर पी.पी. को दीक्षा दी। यह भी आरोप है कि राजेन्द्र गिरि ने पी.पी. के साथ मिलीभगत कर निजि लाभ के लिये यह कदम उठाया था। राजेन्द्र गिरि रानीखेत के उस क्षेत्र का मूल निवासी है जहाँ का पी.पी. भी मूल निवासी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

समीक्षा गातांक से आगे -डॉ.प्रयाग जोशी

हिमांक और क्वथनांक के बीच-2

मैंने प्रस्तुत आलेख में नन्दनकानन से घासतोली तक के वृत्तांत को ही आँखों किरकिरी करते करते पहले इसलिए हेरा कि गोमुख तक इस तरफ से और बसुधारा तक उस तरफ से मेरा देखा हुआ था। विवेचित किताब में, वर्तमान यात्री-दल अनकनन्दा नदी में कहाँ पर आकर मिलता है, यह जानने की उत्सुकता थी। यात्रा की समाप्ति राजखरक के पास भू-स्खलन वाली दुर्घटना में न होती तो वह यात्रा माणा तक मजे की होती।

बद्रीनाथ-माणा से होकर स्वर्गारोहिणी की ओर ले जाने वाला हिमोड़ सतोपंथ कहलाता है। लोकश्रुतियों में, पाण्डवों की अन्तिम शरीर यात्रा इसी क्षेत्र में हुई थी। पांच हजार वर्ष बहुत बड़ी अवधि नहीं है। हिमालय की उम्र के सामने वह बहुत छोटी है। आज की दुनियां के सिंगापुर, गाजियाबाद, मुंबई, दुबई आदि शहरों की बहुमंजिली इमारतों की कतारों के जो चित्र टीवी की स्क्रीनों में देखते हैं, उन्हीं की तरह के लाखों वर्ष पुरानी दरियों के घांघलों के बीच खड़े सूखे सॉलिड कार्बन डाइआक्साइड के दो चित्र किताब के पन्नों में दिखे, उनमें शंखर ने सहस्त्र कमलदल की सी आकृतियों की कल्पना की। उसी तरह की कल्पना लोक जीवन में भी पाण्डवों के प्रति व्याप्त है। कहा जाता है पाण्डव गलने के लिए ही सतोपंथ की तरफ गए थे। जबकि वहाँ चीजें गलती नहीं 'ब्रह्मकमल' बनने और 'गलने' की श्रुति को कई नजरों से देखा जा सकता है। एक बात निर्विवाद हो सकती है कि सतोपंथ से कालिन्दी खाल तक अया-जाया जा सकता रहा है बहुत प्राचीन काल से भी। पुराकथाऐं, लोककथाऐं, पुराणकथाऐं, केदारनाथ से कैलास तक के महाहिमालय की दरियों को आवाजाही विहीन नहीं मानतीं। कैलास तो राजधानी है यक्षों की। 'कैलास' अकेला वही शिखर नहीं है जिसे देखने आजकल पर्यटक जाते है। हर पर्वत शिखर कैलास है जैसे कि हर नदी गंगा है। यह नाम, मात्र एक के लिए रूढ़ नाम नहीं हैं। सामान्य नाम है सब के लिए। नाम एक के लिए विशेष तब होते हैं जब विज्ञान को, ज्ञान परिभाषित करता है।

मेरा ख्याल है, कालिन्दीखाल नाम भी ऐसे ही किसी ने रख दिया और वही चल पड़ा है। कालिन्दी नाम यमुना का है। क्या यमुना का पानी वहाँ है या यमुना का जलागम उस खाल से या उसके मोरेन से है? यमुना का मूल 'यामुन' पर्वत से माना गया है। लोक भाषा में उसे बंदरपूछ कहा गया है। मानसखण्ड का रिव्यू करने गोपालदत्त जी ने मुझसे कहा। मैंने बहुत द्रविड़ प्राणायाम किया उसमें आए भूगोल के पहाड़ों को समझने के लिए। वह लेख छपा भी है पर मैं उससे सन्तुष्ट नहीं हूँ। इस गैंकिताब के बारास्ता-बेरास्ता जो भी पर्वत शिखर, खाल-ताल, हयूंगल और दरियां आई हैं उनके नाम वही है, कहना निर्विवाद नहीं होगा। जब तक सर्वे नहीं होता, नक्शे नहीं बनते, आधिकारिक तौर पर अधिकृत

स्थान-नाम सार्वजनिक नहीं होते, हमें यह अनुमान करने की छूट होनी चाहिए कि इसी रूट पर इन्द्र के खजांची एक यक्ष का आवास था। 'चैत्ररथ' उसके बगीचे का नाम था। 'चैत्ररथ' का यों भी अर्थ कर सकते हैं कि बसंत ऋतु जो भारतीय पंचांगों में बैशाख तक जाती है, उस ऋतु रूपी रथ में वह बगीचा देखने आता था। फूल तो जैसे वहाँ खिलते थे, दुनियाँ में और कहाँ खिलते होंगे! वर्षात भर वह वहाँ मौज करता होगा। कालीदास ने एक और यक्ष की राजधानी अलकापुरी की वहाँ उपस्थिति मानी है। अलका नाम उसकी पत्नी या प्रेमिका का है। वह अलकनन्दा नदी के नाम से नामित है। जैसी महादेव की मायापुरी, पार्वती की मैयापुरी हरिद्वार में है वैसी ही यक्ष की अलका की पुरी का अनुमान अलकनन्दा बांक में न करें तो कहाँ करें?

हिम-शिखरों के टूट-टूट कर नींचे लुड़कने से बने ग्लेश्यिर, राड़, रौड़, रौखड़, भांखड़, रेहड़ और भीमाकार बोल्डरों से मिलकर बने गाद के अंबार की उपरली सतह निरन्तर बढ़ते रहने की मिजाज की होती है। निचली परत द्रवित होकर चूते रहने की। उसमें सोते, छाये, धारे, चोपटाल, गुल-गुल बहते पानी के शोर और ताल-तलैयों की स्थान-स्थिति बनते-बिगड़ते रहने की होती है। जब पाण्डव वहाँ गए थे तब हिमश्रृंग इतने ऊँचे न रहे होंगे। इस बात की सम्भावना भूगर्भ वाले भी करते हैं। उनका यह भी मत है कि हिमालय ऊँचे होते जा रहे हैं और उत्तर की तरफ द्विासक भी रहे हैं। अनुमानतः कहा जा सकता है उस काल में दो पहाड़ों के बीच की घाटियों की गहराई उथली रही होगी।

बहुत बर्फ गिरी। शिखर टूट कर नीचे खाल में आ गया मलवा। खाल के किनारे और ताजी गिरे मलवे के बीच 'करङ-करङ' बच-बच कर चलने की चेतावनी दे रही है दरी के मुंह की तरफ उड़कर आ रही वह हवा जो कोहरे को उड़ाकर ला रही है। शेखर ने पूछा है ये बादल कहाँ से आ रहे हैं? कालीदास कह रहे हैं दरी के मुँह की तरफ से आ रहे हैं जिस पर एवलांस घिरा है। वह आज की रात, कल या एक आध महिना पहले घिरा भी हो सकता है। दो चार वर्ष या करोड़ों वर्षों पूर्व में भी, इससे क्या फरक पड़ता है? फरङ् करङ् शब्द जो हमारी कुमाउंनी में है, उसी को करन्ध्र बनाया है कवि ने-

यः पूरयन् कीच करन्ध्र भागान् दरी मुद्भोच्छेद्य समीरणेन्।

दरियां जहाँ आयत्त रही होंगी वहाँ यक्षों की बस्तियां होगी। उनके नगर ऐसा ही विवृत घाटियों में रहे होंगे। उस प्रान्तर में इन्द्र की हुकूमत होने के उल्लेख मिलते हैं। वह यक्ष-जाति का योद्धा है। रावण को जब सूचना हुई कि उसके पास सोने के भण्डार है तो उसने वहाँ धावे मारे। कुबेर के पुष्पक विमान को उड़ा लाया। एक समय तो उसने कैलास को ही अपना गढ़ बना लिया था। उसका नाम त्रिकूट रखा था उसने। पुराकथाओं के प्राक्इतिहास में ही नहीं, दो-ढाई हजार वर्ष पुराने समय से वहाँ 'सिञ्जा' नाम के शश राज्य की राजधानी होने के प्रमाण मिलते हैं। गोपेश्वर के कत्यूरी राज्यों का क्षेत्र विस्तार भी इस तरफ कम हिमालय के पार ही ज्यादा विस्तृत मालूम पड़ता है।

नृवंश में जाने पर बात अधिक स्पष्ट होती है डोकियो और धागला सिंगमा जैसे क्षेत्रों के सैकड़ों नेपाली जातियां उन्हीं यक्षों की वंशधर हैं, जो डांडों-काठों और हिम-पथों पर घुरड़, काकड़ों की तरह चढ़ने-उतरने की अभ्यस्त हैं। वे हीरे के वर्मों से पखाणों में सूराख करते थे। फिर उन सूराखों में सरिया फंसाकर उनके ऊपर तख्ते रखकर चलने का रास्ता बनाते थे। अघट्ट घाटों को पार करते थे। जैसे आजकल बीसियों मंजिल ऊंचे अपार्टमेंट्स की छत पर मोटी रस्सियों पर बंधी बहती पर बैठकर मजूर बिल्डिगों की पुताई के लिए धरातल की तरफ उतरते हैं वैसे ही वे लोग कांठों में मधुमक्खी के छत्तों से शहद और चट्टाओं से शिलाजीत निकालते थे। पुरचूंड़ियां जैसी बर्फानी नदियों का पानी छानकर सोना इकट्ठा करते थे। अम्रक व हड़ताल जैसे खनिजों को निकालते, सिंधरफ और कस्तूरी व रिखतीती जैसी चीजों को सुखा-संवार कर बिक्री के लिए तैयार करते थे। उन्हीं लोगों के जीन की पहिचान हमें हमारे समय के पर्वतारोही शेरपा लड़कों के खून के परीक्षण में करनी चाहिए। मुझे यह ख्याल आया एडमंड हिलैरी के साथ प्रस्तुत किये गए तेलजिंग नोरके के चित्र को देखकर। उसके शरीर, मुखमुद्रा और अभिमान-विहीन बड्प्पन की व्याख्या नहीं हो सकती। जीने का नाम मरना है उनके लिए। मरना-जीना क्या है उनके लिए? मैं नारायण नगर में 1955-56 में छः या सातवें दर्जे का विद्यार्थी रहा होऊँगा। जुलाय के महीने, चिण्डों की माला को कॉखों में बाँधकर काली की उत्ताल तरंगों में तैरकर पढ़ने के लिए वार आये देवेन्द्र और निरंजन पाल व उक्कू के घनश्याम जोशी के मुख से सुनता था काली में बहकर आने की दुस्साहस भरी अपनी करनियों की गाथाऐं। ऐसी गाथाऐं जीने का नाम ही मरना है। 'हमरो तेजजिंग शेरपा ने हिमालचोर्‌यो चमासूर्‌या' गीत की स्वर लहरी तब से कांनो में गूंजती रही थी। एक ही पंक्ति याद थी। प्रस्तुत किताब में पूरा गीत मिल गया। आनंद आ गया हो।

हम अंग्रेजों के काम को देखते हैं, पढ़ते हैं और उनके नामित स्थानों के ही आदी हो जाते हैं। राजखरक और घासतोली नाम खुद वहाँ तक पशुचारण में लोगों के आने-जाने की निरन्तरता की सूचना दे रहे हैं। फिर भी हमें यकीन नहीं होता कि मिलम और गोंखा के शौकों की भेड़, बकरियां चरने समयों से होकर घासतोली तक को आती ही थी गैर-शौकों के हिमालयी रहवासियों की गाय-भैंसे भी वहाँ चारण के लिस लायी जाती होगी। खरकों में वर्षा 1ध्2तु में लाते जाते थे दुधारू पशु। राजखरक तो बड़ा नाम है!

आज के दौर में जिस प्रकार नन्दनवन और तपोवन देखने के लिए जाने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है वैसी ही वसुधारा, घसतोली और राजखरक तक की आवत-जावत सीमित प्रतिबन्धों के साथ चलते रहनी चाहिए। हमें मौसम के परिज्ञान के लिए वहाँ सशक्त यांत्रिक सिस्टम उपयुक्त स्थान पर स्थापित करना पड़ेगा। उस तुषाराद्रि में सूरज, चौबीसों घण्टा हवा-पानी से जिस तरह के खेल रचाता है, उसका अध्ययन यन्त्रों की मदद से ही सटीक हो सकता है। प्रकृति का सूऽम्यावलोकन भी साहित्य में जरूरी है।

मुख्य कमाल तो वहाँ उष्मा, पानी और हवा का ही है। ये तीनों पदार्थ भौतिक हैं। अलौकिक नहीं। पर न जाने ये कितने रूप बदलते हैं। सभी रूप किसने देखे? हाँ पानी के द्रव, ठोस और गैस रूप सामान्य आदमी भी समझता है। हवा और पानी की भाप से बादल बनते हैं। हवा भी पदार्थ रूप ही है। मिश्रित पदार्थ। बादल ठण्डी वस्तु के सम्पर्क में फुहार, वर्षा, कोहरा, धुन्ध, पाला और बर्फ क्या क्या बना देते हैं, इतना तो लोकज्ञान से भी समझ में आ जाता है।

लोक जिन घोडों की कथाऐं गढ़ता है उनमें सबसे पहले सूर्य के ही गुण-सूत्र जोड़ता है। सूर्यवंशी होते हैं उनके घोड़े भी। उनको उड़ने की सामर्थ्य से मण्डित करती है हवा अपने गुणसूत्र देकर। सूर्यवंशी-वायुपंखी बनते हैं घोड़े। वे तभी

शेष पृष्ठ 5 पर

ज्योतिष की बातें- 196

23 सितम्बर 2024 को बुध अपनी उच्चराशि कन्या में प्रवेश करेगा । वहाँ पर सूर्य से युति होगी अर्थात् बुधादित्य योग बनेगा, साथ ही केतु से भी युति होगी। इसके अतिरिक्त मंगल की अशुभ दृष्टि और गुरु की शुभ दृष्टि भी बुध के ऊपर होगी। अतः कुल मिलाकर बुध अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। फलदीपिका के अनुसार बुध का गोचर दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें तथा ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है। अतः बुध बुद्धि, व्यापार, वाणिज्य, लेखन आदि अपने कारक विषयों में अगले 17 दिन लसह, मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। साथ ही शेष अन्य राशियों को भी शुभफल प्रदान करेगा ।

इस स्तम्भ में ग्रहों का गोचरफल मुख्यतया फलदीपिका ग्रन्थ के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक ग्रह का अलग-अलग गोचरफल लिखा जाता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्म कुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है ।

इस सप्ताह पितृपक्ष चल रहा है अतः पितरों के निमित्त श्राद्ध एवं तर्पण अवश्य करना चाहिए। कुछ भी न हो सके तो पितृस्तोत्रम् का अवश्य ही प्रतिदिन पाठ करना चाहिए ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 87

नारीशक्ति का अतियोग

पहले महिलाएं शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में ही जाती थीं। फिर बाद में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी महिलाएं जाने लगीं। फिर धीरे-धीरे मैनेजमेंट, बैंक, पोस्ट आफिस, सिविल सर्विसेज, कंस्ट्रक्शन, सभी प्रकार के फील्ड जॉब में भी महिलाएं नौकरी करने लगी हैं। कहीं-कहीं पर तो 70-80 प्रतिशत महिला कार्मिकों की संख्या हो गई है। प्राइवेट नौकरी में भी, सेल्स में, रिसेप्शन पर, मॉल में, अब लड़कियों को ही नौकरी मिलती है। उनका एकाधिकार जैसा हो गया है। सुरक्षा बलों में जहाँ लड़के अपना एकाधिकार समझते थे, वहाँ पर भी लड़कियों का अतिक्रमण हो गया हे। पुलिस में, सेना में भी अब लड़कियों की भर्ती होने लगी है। पहले विमान में पायलट के रूप में महिलाओं की भर्ती शुरू हुई, इसके बाद बस में कंडक्टर के पदों पर महिलाओं की भर्ती होने लगी और अब तो बसों की ड्राइवर भी महिलाएं बनने लगी हैं। कथा, सत्संग और आश्रमों में अब केवल महिलाएं ही जाती हैं। बारात में तो अब पुरुष के नाम पर केवल दूल्हा ही होता है। नेतागिरी में भी अब महिलाएं आगे आने लगी हैं। कहीं पर आन्दोलन करना हो, धरना प्रदर्शन करना हो, नारेबाजी करनी हो, पुरुषों के साथ मारपीट करनी हो, वहाँ पर भी महिलाओं का उपयोग होने लगा है।

अब अति हो चुकी है। समानता के नाम पर अथवा नारी सशक्तिकरण के नाम पर पुरुषों का तिरस्कार, उत्पीड़न और शोषण नहीं होना चाहिए। पुरुषों को भी उनका अधिकार मिलना चाहिए। जब लड़का बिना रोजगार के रह जाता है तो उसकी शादी भी नहीं होती है। फिर उस लड़के की माता और उसकी बहन से पूछो कि उनको कितना कष्ट होता है, वे भी महिलाएं ही हैं।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भयंकर बरसात और भूस्खलन ने पर्वतीय सड़कों की सूरत फिर बदली

बदरीनाथ हाईवे से लेकर जोहार-दारमा तक बिखरा मलबा-बोल्डरों को हटाया जा रहा है

जाते हुए मानसून ने उत्तराखण्ड में भयंकर बरसात का परिणाम दिखाया है। उच्चहिमालय में तो सीजन की पहली बर्फ पड़ी तो मध्यहिमालय तक मौसम में तरावट है। भयंकर बरसात और भूस्खलन से पर्वतीय सड़कों की सूरत फिर से बदली है। बदरीनाथ हाईवे से लेकर जोहार, दाराम, व्यास, चौंदास, पिण्डर घाटी तक मलबा हटाया जा रहा है। जलभराव व भूमि कटाव से कई जगह नुकसान हुआ है।

केदारघाटी में लगातार वर्षा से केदार नाथ धाम की पैदल यात्रा को रोकना पड़ा। ढाई हजार से अधिक यात्रियों को सोनप्रयाग में रोका गया। धारचूला तवाघाट लिपुलेख मार्ग बन्द होने से करीब 70 यात्री धारचूला में फंसे रहे। चमोली जिले में भारी बरसात के बीच कमेड़ा में बदरीनाथ हाईवे पर पत्थर मलबा गिरने से यातायात पूरी तरह ठप्प हो गया।

चम्पावत जिले में सड़कों के बन्द होने से अभी तक दिक्कत है। टनकपुर-पिथौरागढ़ हाईवे पर स्वाला के पास अत्यधिक खतरा बना हुआ है। बार-बार मलबा आने से यात्रियों को रोका गया। लोहाघाट के ढोरजा गाँव में पेड़ और मलबा गौशाला में गिरने से माधवी देवी (38) की मौत हो गई। मटियाली गाँव के नकेला तोल में मलबे में दबकर शान्ति देवी (55) की मौत हुई। धूनाघाट भिंगराड़ा-रीठासाहिब मोटर मार्ग पर भिंगराड़ा ऐड़ी बालकृष्ण मन्दिर के पास 50 मीटर सड़क धंस चुकी है। यहाँ कई लोगों के मकानों को खतरा बना हुआ है।

पिथौरागढ़ जिले के गणकोट गाँव के सैनपाटा तोक में मकान में मलबा आने से देवकी देवी (70) की मृत्यु हुई। थल मुनस्यारी रोड सहित सीमान्त की सड़कों में बिखरा मलबा-बोल्डरों को हटाया जा रहा है।

अल्मोड़ा के लोअर माल रोड स्थित बेस अस्पताल के पास दुकानें भरभरा कर जमीदोज हो गई। इसी प्रकार रानीखेत के मीना बाजार में दुकानों पर मलबा गिरने से नुकसान हुआ है। जिले में भैसियाछाना के थिकलन गाँव गधेरा पार कर रहे 73 वर्षीय दान सिंह की बहने से मौत हो गई।

मैदान क्षेत्र में भी भीषण बारिश का प्रकोप रहा। जलभराव के अलावा मलबा आने से नुकसान हुआ है। बाढ़ का खतरा देखते हुए हल्द्वानी में गौला पुल और बनबसा में भारत-नेपाल बॉर्डर पुल पर आवाजाही रोकनी पड़ी। हल्द्वानी में मण्डी के पास ऑटो पलटने से रवि आर्या (27) की मृत्यु हो गई। सितारगंज के ग्राम कौघाअशरफ का काश्तकार गुरनाम सिंह (30) कैलाश नदी में बह गया। नैनीताल में नैनीझील का जलस्तर 12 फीट पार होने से 5 गेट खोल दिये गये। मालरोड पर सीवर लाइन ओवर फ्लो होकर छलकने लगी। ओखलकाण्डा के खनस्यू में ब्लाक संसाधन केन्द्र में मलबा घुसने से नुकसान हुआ है। भीमताल सलड़ी में मलबा आने से यातायात प्रभावित हो रहा है। रामनगर के पीरूमदारा के ग्रामीण इलाके जलमग्न हैं। चोरगलिया में नन्धौर नदी ने भय दिखाया।

जागेश्वर धाम सूर्यास्त के बाद बन्द

दन्या। विश्व प्रसिद्ध जागेश्वर धाम में अब सूर्यास्त के बाद श्रद्धालुओं के प्रवेश पर पूर्णतया रोक लगा दी गई है। एएसआई ने मन्दिर गेट पर इस बारे में नोटिस भी चस्पा कर दिया है। हालांकि यह प्रक्रिया पहले भी थी लेकिन आधिकारिक तौर पर इसके आदेश जारी नहीं किए गए थे।

अल्मोड़ा जिले में पर्यटन विकास

अल्मोड़ा। जिलाधिकारी आलोक कुमार पाण्डे ने जिले में विकास कार्यों समेत अन्य प्राथमिकताएं गिनाई। उन्होंने कहा कि जिले में पर्यटन को बढ़ाने के लिए गम्भीरता से प्रयास किए जाएंगे। कलक्ट्रेट में प्रेस वार्ता में उन्होंने कहा कि अल्मोड़ा अपनी संस्कृति, शिक्षा एवं प्रशासनिक पहचान के लिये प्रसिद्ध है। उनका प्रयास होगा कि अल्मोड़ा अपनी पहचान को बनाए रखे।

रामगंगा पर बनेगा 90 मीटर लम्बा पुल

थल। मुवानी घाटी में रामगंगा नदी पर 90 मीटर लम्बा पुल बनेगा। डीडीहाट के विधायक विशन सिंह चुफाल ने जानकारी देते हुए बताया कि मुवानी जीआईसी के पास रमतड़ में पुल और सड़क की प्रथम चरण को प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति मिल चुकी है। पुल बनने से नदी के दोनों ओर बसे लोगों का लाभ मिलेगा।

रतिया नदी पर 24 मीटर लम्बा पुल बनेगा

चम्पावत। लधियाघाटी क्षेत्र में मैरोली करौली मार्ग पर सीएम घोषणा के तहत 14 मीटर लम्बे पुल का निर्माण किया जायेगा। इसके लिये प्रान्तीय खण्ड लोक निर्माण विभाग ने प्रथम चरण के लिये टेण्डर प्रक्रिया शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि 19 लाख रुपये की लागत से प्रथम चरण का कार्य किया जायेगा।

हेलमेट पहन कर केदारघाटी की यात्रा

रुद्रप्रयाग। गौरीकुण्ड-केदारनाथ पैदल मार्ग पर बारिश के दौरान भूस्खलन को देखते हुए हेलमेट अनिवार्य रूप से पहनने को कहा गया है। यहां जगह-जगह अनाउंसमेंट सिस्टम और अलर्ट लाइट्स लगाई जा रही हैं ताकि इस अतिसम्वेदन शील क्षेत्र में कोई यात्री विपत्ती में न पड़े। गढ़वाल कमिश्नर ने डीएम से पैदल मार्ग पर पुनर्स्थापना के लिये किये जा रहे कार्यों के निर्देश दिये।

चम्पावत में बनेगा कुर्म सरोवर

चम्पावत। 8.23 करोड़ रुपये से कुर्म सरोवर का निर्माण किया जायेगा। कार्यदायी संस्था सिंचाई विभाग ने इसके लिये डीपीआर तैयार कर शासन को भेजी है। चम्पावत में बहुप्रतीक्षित कुर्म सरोवर 170 मीटर लम्बा और 30 मीटर चौड़ाई पर बनेगा। ऐतिहासिक क्रान्तेश्वर मन्दिर के नीचे सिमल्टा गाँव में बन रहे इस सरोवर से भविष्य में पेयजल की आपूर्ति भी की जा सकेगी।

मनगढ़ में खड़िया खदान से खतरा

बेरीनाग। जिसका खतरा था वही हुआ। तहसील बेरीनाग के पीपली क्षेत्र की खड़िया खदान में हुए भारी भूस्खलन से मनगढ़ गाँव में 6 मकान और पंचायत घर ध्वस्त हो गये। क्षेत्रवासियों ने भागकर अपनी जान बचाई।

बताते चलें कि समाजसेवी हिमांशु आगरी ने क्षेत्र में हो रहे खड़िया खनन के अवैध कार्य को लेकर आवाज उठाई थी। सन्देह भी जताया था कि जिस प्रकार से अवैध खनन वाले इलाके में सक्रिय हैं यह पूरे क्षेत्र को खतरा है। इस बरसात में यही सब हो गया है। नाराज ग्रामीणों ने शासन, प्रशासन व स्थानीय जनप्रतिनिधियों से पीड़ितों को उनके नुकसान की भरपाई के लिये राहत देने व अवैध कारोबार बन्द करने की मांग की है।

एसडीएम यशवीर सिंह ने बताया है कि मनगढ़ में भूस्खलन के चलते छह परिवारों को सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट कर दिया गया है। सुरक्षा व स्थायी समाधान की कार्यवाही की जायेगी।

परिक्रमा

नगला में जीएसआई से सीमांकन

रुद्रपुर/पन्तनगर। नगला नगर पालिका क्षेत्र में बसे 738 परिवारों की समस्या को लेकर वन मंत्री सुबोध उनियाल की अध्यक्षता में मंत्रिमण्डलीय उपसमिति की बैठक में खास फैसला हुआ। जिसमें तय किया गया कि कमिश्नर की अध्यक्षता में नगला में वन भूमि के सीमांकन के लिये भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएस आई) की विशेषज्ञ समिति से माप कराई जाएगी। इसमें लोनिवि सहित अन्य विभाग रहेंगे।

असल में स्थानीय राजनीति में मामला उलझा है। पूर्व विधायक राजेश शुक्ला ने मंत्रिमण्डलीय उपसमिति के सदस्य कबीना मंत्री सौरभ बहुगुणा के समक्ष नगला के इस मामले को रखा था। यह भी कहा कि हाईकोर्ट में की गई जनहित याचिका में लोनिवि, वन विभाग में विधि अनुरूप सही पैमाइश नहीं की गई है। मंत्री बहुगुणा की पहल पर कबीना मंत्री उनियाल ने यह बैठक बुलाई। बैठक में समिति के प्रदीप पन्त, एके पाण्डे, आरके सुधांशु, हरीश जोशी आदि थे।

हल्द्वानी में 140 बूथ अतिसम्वेदनशील

हल्द्वानी। नगर निगम ने निकाय चुनाव को देखते हुए तैयारियां शुरू कर दी हैं। प्रशासन, नगर निगम, पुलिस की संयुक्त टीम ने सभी वार्डों में सर्वे कर सम्वेदन शील व अतिसम्वेदनशील बूथों को चिन्हित किया है।

राज्य में नवम्बर माह में निकाय चुनाव हो सकते हैं। ऐसे में नगर निगम व प्रशासन की तैयारियां हैं। प्रशासन ने पूर्व में मतदेय केन्द्रों का सर्वे कर खस्ताहाल बूथों को चिन्हित कर अन्य स्कूलों में शिफ्ट किया था। इधर प्रशासन, नगर निगम, पुलिस की टीम ने सभी 60 वार्डों में सम्वेदनशील व अतिसम्वेदनशील बूथ चिन्हित किए हैं। सर्वे के बाद 30 मतदान केन्द्र व 84 पोलिंग बूथ सम्वेदनशील चिन्हित हुए हैं। इनमें 46 मतदान केन्द्र और 140 पोलिंग बूथ अतिसम्वेदनशील चिन्हित हुए हैं। इन बूथों की सुरक्षा के लिये ठोस योजना के निर्देश दिए गए हैं। इनमें लगभग 14 वार्ड ऐसे है। जो पूरी तरह सामान्य हैं जबकि 46 वार्डों में कई बूथ अतिसम्वेदनशील चिन्हित हुए हैं। इस तरह 21 मतदान केन्द्र व 54 पोलिंग बूथ सामान्य हैं। नगर मजिस्ट्रेट ने राज्य निर्वाचन आयोग को रिपोर्ट सौंपी है।

शराब की दुकान खोलने का विरोध

बागेश्वर। गरुड़-कौसानी मोटर मार्ग पर बार व शराब की दुकान खोलने की भनक लगने ग्रामीण विरोध में उतर आए हैं और एसडीएम को ज्ञापन सौंपा है। उनका कहना है कि यदि जबरन बार या दुकान खोली गई तो उग्र आन्दोलन किया जायेगा। जिला पंचायत सदस्य सुनीता आर्या, गरुड़ कांग्रेस ब्लाक अध्यक्ष गिरीश कोरंगा ने कहा कि प्रशासन द्वारा दयोरड़ा के समीप बार व शराब की दुकान खोलने की जानकारी मिली है। इस मार्ग में इस तरह की गतिविधियों को अंजाम देने के लिए वन विभाग के डिप्टी रेंजर द्वारा अपने परिवार के किसी सदस्य के नाम पर बार का लाइसेंस लेने के लिये आवेदन किया है। उन्होंने कहा कि शान्तप्रिय क्षेत्र में इस प्रकार की गतिविधियां नहीं होने देंगे।

हरगोविंद और प्रदीप जिला व्यापार संघ में

गंगोलीहाट। जिला व्यापार संघ में गंगोलीहाट के हरगोविन्द रावल को उपाध्यक्ष व प्रदीप पन्त को मंत्री जिम्मेदारी दी गई है। जिलाध्यक्ष जनक जोशी ने युवा व्यापारियों को नियुक्त किया। जिला स्तर पर चुने जाने पर रावल व पन्त ने सभी का आभार करते हुए व्यापारी हितों में कार्य करने की बात दोहराई।

चम्पावत व्यापार मंडल कार्यकारिणी विस्तार

चम्पावत। प्रान्तीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल की जिला कार्यकारिणी का विस्तार किया गया है। जिलाध्यक्ष सतीश चन्द्र जोशी और कमलेश राय की ओर से जिले के चारों नगरों में कार्यकारिणी के गठन के बाद जिला कार्यकारिणी का विस्तार किया है। इनमें प्रकाश चन्द्र मुरारी को मीडिया प्रभारी, संजय अग्रवाल मनोज गर्ग को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राजीव आर्या, विजय चौधरी, कीर्ति चौहान को जिला उपाध्यक्ष बनाया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हिमांक और.....

पृष्ठ 3 का शेष

उड़ पाते हैं। मिथक का निर्माण हो जाने पर उसके मुंह में दूध पिए हुए लोहे की बनी छुरी डालदी जाती है। उर्जावान उड़ता घोड़ा, धरती-अंबर एक करने की सामर्थ्य पा जाता है तो भाषा के मौखिक श्रोतों की कहानियों का श्रोता भी 'तात्पर्य' गढ़ लेता है उनमें खुद-ब-खुद अपने मन का। सुनने वाले का मन भी अपना करिश्मा आरोपित करने के लिए स्वतंत्र होता है। जैसे कि प्रस्तुत किताब में उल्लिखित नीलेश के पास गर्म लिवास के अभाव, जूते-जुराब, टोपी मफलर की जुगत न होने, ओढ़ने के लिए पंखी-नमदा और बिछाने की गुदड़ी और तगड़ी खुराक न मिलने से ऊँचाई पर बर्फानी परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने की ऊष्मा न बची थी। जिससे उसके जीवन के वृत्त का अन्त समीप आ गया। मेरे लिए यह यथार्थ घटना लोककथा से ग्रहीत कुमाऊँ की जागर गाथा के बिम्ब को समझने का माध्यम बन गयी। वह लड़का सुदूर गुजरात से धंधे की खोज में उत्तरकाशी तक पहुंच गया था। उससे भी आगे डोडीताल किसी की बोझी-बर्घरी पहुंचाने गया होगा। अमोड़ा गाँव का हम उम्र विजय उसका दोस्त हो गया। दोनों ने गंगोत्री-गोमुद्धा की लाइन में डोट्याली शेरपाओं जैसी ध्याड़ी से कुछ कमाने की सोची। गोमुख में आस्ट्रियायी टैंकरों का बड़ा दल मिला। उसमें एजेंसी ने बहुत शेरपाओं को काम पर लगया। अपने जैसे लोगों की बड़ी बारात में नीलेश और विजय भी चल दिए थे। बहुत आगे चले गए। कालिन्दीखाल से वापस आ रहे लोगों के साथ उन्हें भी लौट आना था। वे लोटे नहीं। उन्हें आगे देखने का कौतूहल था। एक बार देख लेंगे तो अगली बार भी आते रहेंगे यह आकांक्षा रही होगी। आकांक्षा में ही भावी जीवन की रोजी का मन्सूबा रहा होगा। वे आगे ही बढ़े। अंधेरे में, ठंडक में, भीगे हुए थिलगों और खाली पेट। मुझे हिमालय की दुर्लभ धूप में तपे गरम ऊनी वस्त्र की उष्मा के लिए बेचैन अर्जुन की याद आई। पाण्डवेंण जागर गाथा में जगरिये यह प्रसंग गाते है। घाम में सुखाई हुई आराम देह माण है वह।

मैंने गर्ब्यांग ब्यांस-चौदांस की तरफ से आने-जाने वाले, घोड़े-खच्चरों और गधों पर लदे हुए सामान और उनके मालिकों के कंधों पर पड़ी भीगती हुई ऊंनी मंडियों को देखा था। उन काफिलों को याद करके 'घाम तापीं मांण' के अर्थ बुझाता रहा था पहेलियों की तरह। प्रस्तुत किताब में शिवलिंग शिखर की चोटी पर अरुणोदय की लाल चादर लिपटी दिखी तो मुझे लगा नीलेश सूखी हुई मांड ओढ़कर धूप तापने बैठा हुआ है। उतनी ऊँचाई पर अर्जुन की 'मांड' को लेकर उड़ा था भौरे का रूप धरकर हनूमान। यह हनूमान वह नहीं था जिसे मन्दिर में पूजा जाता है। लोक गाथाओं के बुनकरों को चिन्दी-चिन्दी चीथडों के तानो-बानों से चादर बनाने का इल्म होता है।

अर्जुन गढ़लंका जा रहा है बुक्या सोना लाने। गोरीछाल पहुँची गाथा है। गोरीगंगा आकाश चढ़ी है। अर्जुन का घोड़ा पानी की अर्गलाओं को चीरता हुए बीच धारा में पहुँचा तो घोड़ा पलटा दिया उत्ताल तरंगों ने। किं कर्तव्य विमूढ़ हो बैठ गया। अर्जुन गोरी के बगड़ में। बिना काठी के, बिना चमड़े की तापार के, बाघर सौड़ के, बोल्डन, तान-बान-लगाम और माड के गढ़लंका के अभियान को निरस्थ करने की नौमत आई देख सूर्यवंशी वायुपंखी घोड़ा इंसान की जुबान में बोल रहा है- बिना काठी व जीन-जोत के ही चढ़ जाओ मेरे पीठ पर। अपनी टागों से कस कर पकड़ लो मेरी लाद। चाबुक के इशारों से हुकम करो चाल का, तो मैं उड़कर पहुँचाऊ आपको आधे आकाश में। वहाँ खिली हुई धूप में फैलाई है हनूमान ने हमारी मांड। आधी सुखाने डाली है आधे आकाश में उठे हिमालय के शिखर पर। आधी में खुद वह पालथी मारे बैठा है। शिवलिंग शिखर की धूप के चित्र से तादात्म्य हुआ गाथा में सुने गए कथा-बिम्ब का और स्मृति-बिम्ब का भी। अर्जुन ने समेटी धूप में बिछी हुई माड। उसके आसन की तरह पसरे हिस्से को रोलअप करके ओंधे मुंह उलट दिया हनूमान को। घोड़े ने आदेश दिया। 'बांधो इसे मेरी टांगों पर अधकच्चे चमड़े के ताने को काटने की हंसुली के साथ।'

या हनूमान को घोड़े की पिछली टांग से बंधवा कर व्योम से उतारा गया गोरी के बगड़ में। धाप-धाप की टापों के साथ उछलता हनूमान लहूलुहान हुआ तो बोला- 'मुझे मारो मत। मेरे पिता की अनुश्रुतियों से मैंने सुना है कि तुम और मैं ममेरे-बुवेरे भाई हैं। मैं तुम्हें बताऊंगा गढ़लंका के राज। सोने के खजाने के भेद। उनके रक्षकों के आवास। उस पर छापा मारने की साईत भी बताऊंगा। तुम रहम करो। मुझे बंधन से मुक्त करो।' अब लोकगाथा में गढ़लंका जाने की राह खुलती है। कैसी फन्तासी है गढ़लंका की। गढ़लंका हिमालय में है। वहाँ का रक्षक हनूमान है। लोगों को सुनने में अजूबा लगेगा कि सोने की इफरात लंका में नहीं हिमालय में है। वहाँ की नदियों में बहता है सोना। उस सोने की ईंटें नहीं है। वह बुरादा है सोने का। उसे तराजू में नहीं तोलते। माणे, पाथा, नाली से भरते हैं।

पुंडरीकाक्ष महाराज की मूर्ति का अनावरण

बागेश्वर। श्रीश्री 1008 पुण्डरीकाक्ष महाराज की मूर्ति का अनावरण फरसाली के हरज्यू मन्दिर में यूकेएसएससी के अध्यक्ष गणेश मर्तोलिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर समस्त क्षेत्रवासियों सहित श्रद्धालुजन जुटे और पूजा-अर्चना सहित जनमिलन कार्यक्रम हुआ।

श्रद्धांजलि-

धरम सिंह टोलिया

नई दिल्ली। मयूर विहार निवासी धरम सिंह का विगत दिवस असमय निधन हो गया। सामाजिक कार्यो से जुड़े टोलिया जी आत्मीक व्यक्ति थे। पिघलता हिमालय परिवार अपने वरिष्ठ साथी स्व.धरम सिंह टोलिया को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

कुंदन सिंह टोलिया

पिथौरागढ़। रेडक्रास सोसाइटी उत्तराखण्ड के अध्यक्ष, मुनस्यारी के पूर्व ब्लाक प्रमुख कुन्दन सिंह टोलिया का विगत दिवस निधन हो गया। खड़ी और खरी कहने के लिये चर्चित टोलिया जी सीमान्त क्षेत्र की गतिविधियों में हमेशा सक्रिय रहे। पिथौरागढ़ धर्मशाला लाइन में कारोबार के साथ व सिल्थाम में अपने परिवार के साथ रहते थे। पिछले कुछ समय से स्वास्थ्य कारणों से वह हल्द्वानी भी रहे। पिघलता हिमालय के शुरुआती समय 1978 से ही वह इससे जुड़े थे। पिघलता हिमालय स्व. कुन्दन सिंह टोलिया को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

डॉ.भूपेन्द्र सिंह जंगपांगी और डॉ.खुशाल सिंह अपर निदेशक बने

देहरादून। संयुक्त निदेशक उत्तराखण्ड भेड़ एवं ऊन विकास बोर्ड एवं सीईओ उत्तराखण्ड भेड़ एवं ऊन विकास बोर्ड का अतिरिक्त प्रभार देख रहे डॉ. रमेश सिंह नित्वाल को अतिरिक्त प्रभार से अवमुक्त करते हुए अपर निदेशक के रूप में पदोन्नति मिली है। उनका तैनाती स्थल गढ़वाल मण्डल पौड़ी होगा।

इसी प्रकार संयुक्त निदेशक रोग निदान प्रयोगशाला श्रीनगर पौड़ी गढ़वाल डॉ. भूपेन्द्र सिंह जंगपांगी की पदोन्नति अपर निदेशक पशुधन विकास के रूप में हुई है। इनका तैनाती स्थल गोपेश्वर, चमोली है।

लीलाधर व्यास बने माध्यमिक शिक्षा के प्रभारी निदेशक

देहरादून। शासन ने कुमाऊँ मण्डल में अपर शिक्षा निदेशक के पद पर कार्यरत लीलाधर व्यास को माध्यमिक शिक्षा का प्रभारी निदेशक बनाया है। शिक्षा सचिव रविनाथ रामन की ओर से इस सम्बन्ध में आदेश जारी किए गए हैं। शिक्षा सचिव ने कहा कि लीलाधर व्यास को एडी कुमाऊँ माध्यमिक शिक्षा के पद से अवमुक्त करते हुए उन्हें अगले आदेश तक के लिये प्रभारी निदेशक का प्रभार दिया गया है।

खटीमा डिग्री कालेज में भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत गहरी हैं

बिजली फिटिंग में 13लाख से अधिक खर्च

खटीमा। हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की करतूतों का चिट्ठा गली-मोहल्लों में पढ़ा जा रहा है। यहाँ स्टाफ में धड़े होने और सरकारी धन के लिये मची लूट को लेकर वर्षों से हल्ला मचा हुआ है लेकिन शासन-प्रशासन मजाल है कोई कुछ कर ले। ऐसे में पठन-पाठन से ज्यादा दूसरे कार्य होते रहने हैं। कई बार सूचना अधिकार में गड़बड़झालों की बातें पता चलती हैं। इस महाविद्यालय में प्राचार्य की कुर्सी सम्भालना बहुत कठिन माना जाने लगा है। अराजकता का हाल यह है कि विभिन्न प्रकार के मदों को सूंघते हुए चट करने वाले कोई न कोई चाल चलते रहते हैं।

ताजा मामले में आरटीआई कार्यकर्ता द्वारा मांगी गई सूचना में पता चला कि बिजली फिटिंग हुई है। क्रीडा सामग्री के दस्तावेजों का वीडियो भी वायरल हो रहा है। आरटीआई कार्यकर्ता दीपक बिष्ट कहते हैं कि पूर्व में भ्रष्टाचार को लेकर जानकारी ली गई थी। छात्र नेता नये और पुराने सभी मामलों की जाँच की मांग कर रहे हैं।

उच्चशिक्षा : प्रवेश और चुनाव की उछाल

उत्तराखण्ड में उच्चशिक्षा पटरी में आ भी पायेगी, इसको लेकर सवाल उठ रहे हैं। इस बार प्रवेश को लेकर समर्थ पोर्टल से शुभारम्भ किया गया लेकिन प्रवेश से वंचित छात्र-छात्राओं की हवाला देते हुए पोर्टल को कई बार खोला जा चुका है। आखिर कब तक प्रवेश प्रक्रिया होगी और छात्र संघ चुनाव की उछाल होती रहेगी? विश्वविद्यालय में परीक्षाफल को लेकर भी हंगामा मचा हुआ है। छात्र अंक पत्रों में गलती को लेकर बार-बार हल्ला मचा रहे हैं।

शिक्षामंत्री समय पर प्रवेश, परीक्षा, परिणाम की बात दोहराते रहते हैं लेकिन छात्र नेताओं के प्रदर्शन के बाद सारी तिथियां बदलती रहती हैं।

शिक्षा का सार्टिफिकेट बन जाना इसके महत्सव को घटा रहा है

पी.सी.तिवारी

शिक्षा मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है। शिक्षा को मनुष्य में शिष्टाचार, शालीनता, सदाचार आदि जाने क्या-क्या सद्गुणों को प्रदान करने वाली माना जाता है। आचरण के आधार से समाज में शिक्षित व्यक्ति की पहचान हो जाया करती थी लेकिन जब से शिक्षा मात्र एक सार्टिफिकेट(चाहे फर्जी ही क्यों न हो) बन कर रह गई, इसका मूल एवं महत्वपूर्ण उद्देश्य ही समाप्त हो गया। आज शिक्षित बेरोजगारों की फौज को नौकरी के लिये दर-दर भटकता देख ऐसा लगता है कि आज सामान्य शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि 1952 की आजाद भारत की चुनी हुई सरकार से लेकर आज तक की किसी भी सरकार ने शिक्षा के महत्व को नहीं समझा। सरकारें आई और गई। किसी ने भी इसको जीवनोपयोगी बनाने की कोशिश नहीं की। सभी ने अपने-अपने हिसाब से शिक्षा को भी राजनीति के चलते कहीं जनता की मांग पर तो कहीं तोहफे के रूप में पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्रों में भी हर दो किमी की दूरी में प्राइमरी स्कूल खोलकर दो-दो अध्यापक नियुक्त कर दिये गये। इसके बाद किसी ने भी यह जानने की कोशिश नहीं की कि स्कूल का क्या हाल है।

संचालित स्कूलों का हाल अहा....। मुख्यालय से 50-60 किमी तक दूरी में स्थित इन स्कूलों के शिक्षकों के बच्चे मुख्यालय के प्राइवेट स्कूलों में पढ़ते हैं, इसलिये इन्होंने मुख्यालय में निवास स्थान बनाया है। ऐसे में अपने तैनाती स्थल पर प्रतिदिन आना-जाना करते हुए नौकरी पकाते हैं। बहुत सारे स्कूल सड़क से तीन-चार किमी पैदल दूरी में हैं तो वहाँ तक पहुँचने में और अधिक समय लगता है। जिन स्कूलों में महिला शिक्षक है। उन्हें तो सुरक्षा की दृष्टि से और भी एक घण्टा पहले स्कूल छोड़ देना पड़ता है ताकि समय से सुरक्षित अपने परिवार में पहुँच सकें। विचार करो, लाखों-करोड़ों का सरकारी खर्च पर शिक्षा के मन्दिरों का क्या हाल हो चुका है।

इसके अलावा विचार करें तो दिखाई देता है- एक सरकार आई, उसने शिक्षा की आड़ में मलाईदार योजना चलाई। 'प्रौढ़ शिक्षा' नाम की इस योजना ने युवा शिक्षित व बेरोजगारों का मजाक ही उड़ाया। सम्भवतः तब सरकार ने शिक्षित बेरोजगारों की भीड़ को देख सोचा होगा कि बूढ़ों को पढ़ाया जाए। कम से कम शिक्षित होने के बाद ये नौकरी तो मांग नहीं सकते। इस योजना में शिक्षा तो जैसी की तैसी रही लेकिन सिस्टम में कुछ मालामाल हो गये। इसके बाद दूसरी सरकार आई तो उसने लुभावनी योजना 'मिड डे मील' चला दी। इसने अल्प वेतनभोगियों को भी लाभान्वित किया। कई बार सुनने में आया कि इन्हीं ने मिड डे मील के चावल की कालाबाजारी व मिलीभगत की है। इसमें कई मामले उजागर हो चुके हैं। कुल मिलाकर ये निरर्थक योजनाएं विफल ही समझी जानी चाहिये। कोई भी सरकार शिक्षा को जीवन में उपयोगी तथा रोजगारपरक नहीं बना सकी। वर्तमान में समाज में शिक्षित और अशिक्षित में कोई फर्क नहीं किया जा रहा और शिक्षा को रोजगारपरक बनाना आवश्यक हो गया है। जहाँ तक उच्चशिक्षा का सवाल है यह तो बालक-बालिका की योग्यता और उसकी पारिवारिक स्थिति पर निर्भर करता है। औसत दर्जे का छात्र को यह सोचना होगा इण्टर पास कर नौकरी मिल जाती।

अब सरकार को विचार करना चाहिये कि सामान्य शिक्षा समाज को कुछ नहीं दे सकती, कम से कम पढ़ने वाले को रोजगार तो दे सकती है। इसके लिये माध्यमिक शिक्षा में अनेक सुधार के साथ व्यावसायिक विषयों की पढ़ाई पर जोर दिया जाना चाहिये।

(भदेलवाड़ा, ऐचोंली, पिथौरागढ़)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555
नरेन्द्र सिंह रावत

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From
Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

नन्दा उत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

डा. प्रहलाद सिंह मर्तोलिया
जोहार नगर
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

चन्दन सिंह रावत
साकेत कलोनी
दोनहरिया, हल्द्वानी

श्रीमती मथुरा पांगती
'शक्ति कुंज' 5/14,
जोहार नगर, हल्द्वानी

Pushkar Singh
Panchpal
South Extension Part II
New Delhi

करम सिंह खम्पा
खम्पा रेडीमेट गारमेंट ग्वालदम
(चमोली)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)